अल्लामा मजलिसी

हकीम लुक़मान की नसीहतें

हकीम

लुक़मान

की नसीहतें

अल्लामा मजलिसी

ट्रांस्लेशन

अब्बास असग़र शबरेज़

किताब	:	**हकीम लुक़मान की नसीहतें**
राइटर	:	**अल्लामा मजलिसी**
ट्रांस्लेटर	:	**अब्बास असग़र शबरेज़**
पहला प्रिन्ट	:	**मई 2018**
तादाद	:	**2000**
पब्लिशर	:	**ताहा फ़ाउंडेशन, लखनऊ**
प्रेस	:	**न्यु लाइन प्रॉसेस, दिल्ली**
क़ीमत	:	**20 रूपए**
कांटेक्ट न०	:	+91- 9956 62 0017 8127 79 3428

بسم الله الرحمن الرحيم

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا لُقْمَٰنَ ٱلْحِكْمَةَ أَنِ ٱشْكُرْ لِلَّهِ ۚ
وَمَن يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن كَفَرَ
فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ حَمِيدٌ ١٢

हमने लुक़मान को हिकमत दी और कहा कि अल्लाह का शुक्र अदा करो और जो भी शुक्र अदा करता है वह अपने ही भलाई में करता है और जो नेमतों को ठुकराता है उसे पता होना चाहिए कि अल्लाह बेनियाज़ भी है और हर हाल में तारीफ़ के लायक़ भी है।

(सूरए लुक़मान/12)

पहली बात

हकीम लुक़्मान को हम सभी ख़ूब जानते भी हैं और हम सब बराबर उनका नाम भी सुनते आए हैं। यहाँ तक कि उनके नाम से हमारे यहाँ एक मुहावरा भी है कि ''इसका इलाज तो हकीम लुक़्मान के पास भी नहीं है''।

मगर सच्ची बात है कि हम हकीम लुक़्मान को उस तरह से जानते और पहचानते ही नहीं है जिस तरह से हमें पहचानना चाहिए था क्योंकि आमतौर पर लोग यह समझते हैं कि हकीम लुक़्मान पुराने ज़माने में कोई बहुत बड़े हकीम गुज़रे हैं जो लोगों की बीमारियों का इलाज करते थे।

पते की बात यह है कि ऐसा बिल्कुल नहीं है क्योंकि न तो हकीम लुक़्मान हकीम ही थे और न ही वह लोगों की बीमारियों का इलाज करते थे। असल में अरबी में हकीम उस आदमी को कहा जाता है जो बहुत पढ़ा-लिखा हो, बड़ी गहरी-गहरी

और काम आने वाली बातें करता हो, ऐसी बातें जिन पर अगर लोग चल लें तो उनकी ज़िंदगियाँ कामयाब हो जाएं। दूसरी तरह से हम यूँ भी कह सकते हैं कि हकीम वह आदमी होता है जो इलाज तो करता है मगर बदन की बीमारियों का नहीं बल्कि रूहानी बीमारियों का। हकीम वह आदमी होता है जो दिमाग़ की गुत्थियाँ सुलझाता है और लोगों को इन गुत्थियों से बाहर निकालता है यानी एक तरह से उनका इलाज ही करत है। बहरहाल हकीम लुक़मान हकीम तो थे मगर बदन की बीमारियों के हकीम बिल्कुल नहीं थ और न ही वह इस काम के लिए मशहूर हैं।

असल में हुआ यह कि जब यह हकीम लफ़्ज़ अरबी से उर्दू में आया तो इसके मायनी बदल गए और यहाँ हकीम उसे कहा जाने लगा जो बीमारियों का इलाज करता हो। इस तरह हकीम लुक़मान के नाम के साथ हकीम जुड़ जाने से आमतौर पर यही समझा जाने लगा कि हकीम लुक़मान बदन की बीमारियों का इलाज करने वाले थे।

क़ुरआन करीम ने भी हकीम लुक़मान का नाम बड़ी इज़्ज़त के साथ लिया है बल्कि एक पूरा सूरह ही *सूरए लुक़मान* के नाम से है। ख़ुद क़ुरआन ने भी कहीं यह बात नहीं कही है कि हकीम लुक़मान लोगों की बीमारियों का इलाज किया करते थे बल्कि क़ुरआन ने उन्हें एक मार्गदर्शक, गाइड या मेंटर के तौर पर पहचनवाया है। क़ुरआन ने सूरए लुक़मान में हकीम लुक़मान की वह गहरी-गहरी नसीहतें भी हम तक पहुँचाई हैं जो लुक़मान ने अपने बेटे से की थीं।

हकीम लुक़्मान अपने ज़माने के सब से पढ़े-लिखे इंसान थे और अल्लाह के यहाँ उनका दर्जा बड़ा ऊँचा था।

जो किताब आपके हाथों में है यह असल में वह हदीसें हैं जो हमारे मासूम इमामों[अ०] ने हकीम लुक़्मान के बारे में लोगों के बीच सुनाई थीं। इन हदीसों को पढ़कर हकीम लुक़्मान और उनकी नसीहतों के बारे में काफ़ी कुछ समझ में आ जाता है।

जो नसीहतें उन्होंने अपने बेटे को की थीं अगर हम उन नसीहतों को पकड़कर अपनी ज़िंदगी को आगे बढ़ाएं तो दुनिया में भी कामयाब हो सकते हैं और मरने के बाद क़यामत में भी।

ताहा फ़ाउंडेशन
लखनऊ

हकीम लुक़मान की नसीहतें

अल्लाह ने क़ुरआन में हज़रत लुक़मान के बारे में इस तरह से फ़रमाया हैः

> हम ने लुक़मान को हिकमत[1] दी और कहा कि अल्लाह का शुक्र अदा करो और जो भी शुक्र करता है वह अपने ही फ़ाएदे के लिए करता है और जो नेमतों को ठुकराता है उसे पता होना चाहिए कि अल्लाह बेनियाज़[2] भी है और हर हाल में हम्द[3] के लायक़ भी है।

---

[1] हिकमत ऐसी बातों को कहते हैं जो इतनी मज़बूत हों कि उन्हें दूसरी किसी भी बात या दलील से न काटा जा सके यानी गहरी-गहरी और काम आने वाली बातें।

[2] जिसे किसी की भी ज़रूरत न हो।

[3] तारीफ़

ऐ रसूल! उस वक़्त को याद कीजिए जब लुक़मान ने अपने बेटे को समझाते हुए कहा था कि बेटा! ख़बरदार! किसी को भी अल्लाह का शरीक[1] न बनाना क्योंकि शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

ऐ बेटा! अच्छाई या बुराई चाहे एक राई के दाने के बराबर ही क्यों न हो या चाहे किसी पत्थर के अंदर या आसमानों पर या चाहे ज़मीनों की गहराईयों में ही क्यों न हो, अल्लाह क़यामत में उसे ज़रूर सामने लाएगा। अल्लाह *लतीफ़* यानी करम करने वाला और *ख़बीर* यानी हर छुपी से छुपी हुई चीज़ की ख़बर रखने वाला है।

ऐ बेटा! नमाज़ क़ायम करो, नेकियों (अच्छाईयों) का हुक्म दो, बुराईयों से रोको और इस रास्ते में जो भी मुसीबत आए उस पर सब्र करो क्योंकि यह एक बड़ी हिम्मत वाला काम है।

ख़बरदार! लोगों के सामने अकड़कर मुँह न फुला लेना और ज़मीन पर अकड़ कर मत चलना क्योंकि अल्लाह अकड़ने वालों और घमंडियों को पसंद नहीं करता है।

और अपनी चाल-ढाल में बीच का रास्ता अपनाना (यानी न बहुत तेज़ और न बहुत धीरे) और अपनी आवाज़ धीमी रखना क्योंकि सब से बुरी आवाज़ गधे की

---

[1] भागीदार

होती है (जो बेवजह फूहड़पन से चीख़ता रहता है।[1]

मरहूम शेख़ तब-र-सी का मानना है कि लुक़मान के बारे में उलमा के बीच मतभेद है। कुछ उलमा का कहना है कि उनके पास अल्लाह की हिकमतों का इल्म[2] तो था लेकिन वह नबी नहीं थे लेकिन कुछ दूसरे उलमा का कहना है कि वह नबी भी थे।[3] कुछ उलमा का मानना है कि लुक़मान, बाऊरा के बेटे थे, हज़रत अय्यूब[अ०] की बहन या ख़ाला के बेटे थे और हज़रत अय्यूब[अ०] के वक़्त तक ज़िन्दा रहे थे और उन से उन्होंने बहुत कुछ सीखा भी था।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैः

अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने लुक़मान को बड़े ख़ानदान का होने या मालदार होने या भारी-भरकम बदन होने या ख़ूबसूरत होने की वजह से हिकमतें नहीं दी थीं बल्कि अल्लाह ने ऐसा इसलिए किया था क्योंकि लुक़मान अल्लाह का हुक्म मानने में बड़े मज़बूत थे, गुनाहों से बहुत दूर रहते थे, हिकमत की बातों से हटकर कोई बात ही नहीं करते थे, बड़े आराम व इत्मिनान वाले दिल के मालिक थे, बहुत सोच-विचार में डूबे रहते थे और उनकी निगाह बड़ी गहरी थी। उन्हें दूसरों से कोई नसीहत लेने की कोई ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी। दिन में कभी नहीं सोते थे। किसी ने भी उन्हें

---

[1] सूरए लुक़मान/12-19

[2] ज्ञान

[3] तफ़सीरे मजमउल बयान, 4/315

पेशाब-पाख़ाना करते या नहाते नहीं देखा था क्योंकि वह यह सारे काम दूसरों से छुपकर करते थे। उनकी निगाह बड़ी गहरी थी मगर वह कभी भी दूसरों की बातों में दिलचस्पी नहीं लेते थे। उन्हें अपने गुनाहों का इतना डर था कि कभी भी किसी बात पर नहीं हंसते थे और न कभी अपने लिए किसी पर ग़ुस्सा होते थे। न ही कभी किसी का मज़ाक़ उड़ाते थे। न दुनिया की कोई चीज़ मिलने पर ख़ुश होते थे और न किसी चीज़ के हाथ से निकल जाने पर दुखी होते थे। उन्होंने बहुत सी औरतों से शादी की थी और उनके बच्चे भी बहुत सारे थे जिनमें से बहुत सारे मर भी गए थे मगर उन्होंने न किसी के होने की ख़ुशी मनाई और न कभी वह किसी के मर जाने पर रोए। ऐसा कभी हुआ ही नहीं कि दो लोग आपस में लड़ रहे हों और वह उनका झगड़ा ख़त्म कराए बिना आगे बढ़ गए हों। अगर किसी की कोई बात उनके दिल को भा जाती थी तो उस बात का मतलब भी उस आदमी से ज़रूर पूछते थे और यह भी पूछ लेते थे कि उसने वह बात किससे सुनी है। वह पढ़े-लिखे व समझदार लोगों और उलमा के साथ बहुत उठते-बैठते थे। क़ाज़ियों और बादशाहों के पास उनका हाल-चाल लेने भी जाया करते थे ताकि उनके हालात को समझकर सीख ले सकें। क़ाज़ियों को अपने ओहदे[1] की वजह से जिन हालात का का सामना करना पड़ता है उन्हें जानकर उनके साथ हमदर्दी किया करते थे। उधर

[1] पद

से बादशाहों के हाल पर भी रहम खाते थे कि बादशाह (अपनी नासमझी की वजह से) अल्लाह के सामने अकड़ने लगते हैं और इस मिट जाने वाली दुनिया को सब कुछ समझ लेते हैं। लुक़मान उनके हालात से सीख लिया करते थे और उनके बुरे कामों से बहुत कुछ सीखा करते थे और फिर अपने दिल को अपने कंट्रोल में करने की कोशिश भी किया करते थे। अपनी ख़्वाहिशों[1] को दबाने और शैतान की चालों से बचने के रास्ते ढूँढा करते थे। अपने दिल की दवा सोच-विचार से किया करते थे और अपने दिल की बीमारी का इलाज दुनिया और दुनिया वालों की बातों से सीख लेकर किया करते थे। जब तक किसी काम से उन्हें किसी भलाई की उम्मीद नहीं होती थी तब तक वह काम नहीं करते थे।

यही वह सारी बातें थीं जिनकी वजह से अल्लाह ने उन्हें हिकमतें दी थीं और गुनाहों से दूर कर दिया था। एक बार अल्लाह ने दिन में उस वक़्त कुछ फ़रिश्तों को उनके पास भेजा था जब लोग दोपहर का खाना खाकर सो जाते हैं। फ़रिश्तों ने हकीम लुक़मान के पास आकर उन्हें आवाज़ दी। लुक़मान उनकी आवाज़ तो सुन पा रहे थे मगर उन्हें देख नहीं पा रहे थे। फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ लुक़मान! क्या आप ज़मीन पर अल्लाह का ख़लीफ़ा बनना चाहते हैं ताकि लोगों के बीच फ़ैसले कर सकें और उनके कामों को आगे बढ़ा सकें ?

---

[1] इच्छाओं

हकीम लुक़मान ने कहा कि अगर अल्लाह का फ़ैसला यही है कि मुझे यह काम करना है तो मैं बिल्कुल करूँगा क्योंकि अगर मैं उसके हुक्म से यह काम करूँगा तो वह मेरी मदद ज़रूर करेगा और इस रास्ते में मुझे जिस चीज़ की भी ज़रूरत होगी उसके बारे में वह मुझे ख़ुद ही सिखाएगा और मुझे ग़ल्तियों से बचाकर रखेगा लेकिन अगर उसने यह काम मेरे ऊपर छोड़ दिया है तो मैं इससे बचना ही चाहूँगा।

फ़रिश्तों ने पूछा कि ऐ लुक़मान! आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?

लुक़मान ने कहा कि यूँ तो अल्लाह के दीन के हिसाब से लोगों के बीच इंसाफ़ व फ़ैसले करना बहुत अच्छी बात है लेकिन यह एक ऐसा काम है जिसमें आदमी को बड़ी कठिनाईयाँ और मुसीबतें भी झेलना पड़ती हैं। अगर अल्लाह किसी को उसके हाल पर छोड़ दे और इस काम में उसका साथ न दे तो ऐसे आदमी को अंधेरे चारों ओर से घेर लेते हैं। ऐसा आदमी दो चीज़ों के बीच फंस कर रह जाता है: या तो वह सही फ़ैसला करेगा और सलामत रहेगा या ग़लत फ़ैसला करेगा और जन्नत के रास्ते से भटक जाएगा। दुनिया में गिरा–पड़ा रहना क़यामत में पछताने से कहीं अच्छा है क्योंकि अदालत में इंसाफ़ करने वाले का लोगों के बीच नाम तो होता है और इज़्ज़त भी होती है मगर जो आदमी दुनिया को क़यामत के बदले में चुन लेता है उसे दोनों जगह घाटा होता है क्योंकि यह दुनिया बड़ी जल्दी हाथ से निकल जाने वाली है। फिर क़यामत में उसके हाथ कुछ नहीं लगता।

लुक़्मान की ज़बान से हिकमत की ऐसी-ऐसी बातें सुनकर फ़रिश्तों को बड़ा ताज्जुब हुआ। अल्लाह को भी लुक़्मान की यह बातें बड़ी अच्छी लगीं। बहरहाल रात हो गई और लुक़्मान अपने बिस्तर पर जाकर लेट गए। फिर अल्लाह ने हिकमत का नूर लुक़्मान की तरफ़ भेजा जिसने उन्हें सर से पैर तक पूरी तरह से ढक लिया। जिन पलों में वह सो रहे थे तभी अल्लाह ने उन्हें हिकमतों का तोहफ़ा दिया था। इसके बाद जब वह सोकर उठे उस वक़्त की सारी दुनिया में सब से ज़्यादा समझदार और हकीम (हिकमत वाले) इंसान थे। फिर लुक़्मान बाहर निकले और जब लोगों के बीच पहुँचे तो उनकी ज़बान से हिकमत के सौते फूट रहे थे। अब लुक़्मान हर एक को अल्लाह के इल्म की अच्छी-अच्छी बातें बता रहे थे।

जब हज़रत लुक़्मान ने फ़रिश्तों से कह दिया कि मैं नबी नहीं बनना चाहता हूँ तो अल्लाह ने फ़रिश्तों को हज़रत दाऊद[अ०] के पास भेज दिया। फ़रिश्तों ने हज़रत दाऊद[अ०] से कहा कि अल्लाह आपको ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाना चाहता है और हज़रत दाऊद राज़ी हो गए। जो शर्त हज़रत लुक़्मान ने रखी थी वह हज़रत दाऊद[अ०] ने नहीं रखी, इसलिए अल्लाह ने ज़मीन पर उन्हें अपना ख़लीफ़ा बना दिया। फिर अल्लाह ने बार-बार हज़रत दाऊद[अ०] का इम्तेहान लिया। उन

से कुछ *तर्के औला*[1] भी हुए थे जिन्हें अल्लाह ने माफ़ कर दिया था।

हज़रत लुक़मान अकसर हज़रत दाऊद[अ०] से मिलने जाते रहते थे और अपने इल्म के समुद्र से मोती निकाल-निकालकर उन्हें नसीहत करते रहते थे। हज़रत दाऊद[अ०] उनसे कहा करते थे कि ऐ लुक़मान! आप की क़िस्मत कितनी अच्छी है कि आपको हिकमत दी गई है, इम्तेहान को आप से उठा लिया गया है और दाऊद को ख़िलाफ़त देकर उसे इम्तेहान में डाल दिया गया है।

इसके बाद हकीम लुक़मान ने अपने बेटे को इतनी नसीहतें की थीं कि उसका दिल हिकमतें सुनने के लिए तैयार हो गया था और फिर हकीम लुक़मान ने उसके दिल में हिकमतें उतार दीं जिससे हकीम लुक़मान की हिकमतों के राज़ उसके दिल में बैठ गए थे।

लुक़मान ने अपने बेटे को जो नसीहतें की थीं उनमें कुछ यह थीं:

ऐ बेटा! जिस दिन से तुम इस दुनिया में आए हो असल में उसी दिन से तुम ने इस दुनिया से अपनी पीठ फेर ली है और आख़िरत (मरने के बाद की दुनिया) की तरफ़ अपना मुँह कर लिया है। हर पल तुम आख़िरत की तरफ़ आगे बढ़ रहे हो। इस तरह वह घर जिसकी तरफ़ तुम ने अपना मुँह फेर लिया है वह बड़ी तेज़ी के साथ तुम्हारी

---

[1] तर्के औला यानी किसी ज़्यादा अच्छे काम को छोड़कर कोई कम अच्छा काम करना

तरफ़ आ रहा है और अभी जिस घर में तुम हो वह हर दिन तुम से दूर होता जा रहा है।

ऐ बेटा! पढ़े-लिखों और अक़्लमंदों के साथ उठा-बैठा करो मगर उनके पास बैठकर उनके साथ बेकार की बहस मत करना कि कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें कुछ सिखाने और बताने से अपना हाथ पीछे खींच लें।

दुनिया से बस उतना ही लेना जितना तुम्हारे लिए काफ़ी हो और ऐसा भी न करना कि दुनिया से पूरी तरह से अपना मुँह फेर लो क्योंकि अगर ऐसा किया तो तुम दूसरों पर बोझ बन जाओगे और उनके मोहताज हो जाओगे।

दुनिया के अंदर इतने भी मत डूब जाना कि तुम्हें मरने के बाद अपनी आख़िरत में घाटा उठाना पड़े।

बस इतने रोज़े रखना कि तुम्हारी ख़्वाहिशें[1] दब जाएं, इतने रोज़े बिल्कुल मत रखना कि नमाज़ पढ़ने की ताक़त ही न बचे क्योंकि अल्लाह को रोज़े से बढ़कर नमाज़ पसंद है।[2]

ऐ बेटा! यह दुनिया एक बड़ा गहरा समुद्र है जिसमें न जाने कितने लोग डूबकर मर चुके हैं। इसलिए इस समुद्र के ख़तरों से बचने के लिए ईमान को अपनी कश्ती बनाओ और इस कश्ती का बादबान (खेवन) अल्लाह पर तवक्कुल[3] को बना लो। इस कश्ती में अपने सफ़र का सामान

---

[1] इच्छाएं

[2] यह रमज़ान के महीने के वाजिब रोज़ों की बात नहीं है बल्कि आम दिनों में मुस्तहब रोज़ों की बात है।

[3] अल्लाह पर भरोसा

हराम[1] और मकरूह[2] कामों से बचाव को रखना। अब अगर तुम निजात (निर्वाण) पा गए तो तुम्हारी यह निजात अल्लाह के करम की वजह से होगी और अगर डूब गए तो ख़ुद अपने गुनाहों की वजह से ही डूबोगे।

एक दूसरी हदीस में ऐसे भी लिखा हैः

ऐ बेटा! परहेज़गारी (गुनाहों से दूरी) को अपनी कश्ती बना लो और इस कश्ती का सामान अल्लाह, उसके नबियों और रसूलों पर ईमान होना चाहिए। इस कश्ती का खेवन अल्लाह पर तवक्कुल को और खेवनहार अपनी अक़्ल को बनाना ताकि तुम्हारी कश्ती इस अक़्ल की रौशनी में आगे बढ़ती रहे। इल्म वह चीज़ है जो तुम्हारी इस कश्ती को रास्ता दिखाएगा। साथ ही इस कश्ती का लंगर मुसीबतों और गुनाहों को छोड़ने पर होने वाली तकलीफ़ पर सब्र और अल्लाह की इताअत[3] होना चाहिए।

ऐ बेटा! अगर तुम ने अपने बचपन में ही अदब[4] सीख लिया तो बड़े होकर तुम इससे बड़ा फ़ाएदा उठाओगे। वैसे जो अच्छी बातों की अहमियत जानता है बस वही उन्हें पाने की कोशिश करता है और जो अच्छी बातों को जानने की कोशिश करता है वह इस रास्ते में आने वाली दिक़्क़तों को भी झेलने की हिम्मत रखता है। अब

---

[1] ऐसा काम जिसका करना गुनाह हो

[2] ऐसा काम जिसका करना गुनाह तो नहीं है मगर अल्लाह ऐसे काम को पसंद नहीं करता है।

[3] इताअत यानी अल्लाह का हुक्म मानना

[4] आचार-सदाचार

जो इस तरह से अच्छी बातों को सीख लेता है वह उन्हें सजोए रखने की अपनी भरपूर कोशिश भी करता है। जब वह इन बातों को सीख लेता है तो अपने अंदर इन बातों को उतारने की कोशिश भी करता है और जब इन बातों को अपने अंदर उतार लेता है तो फिर दुनिया में भी और मरने के बाद भी ख़ूब फ़ाएदा उठाता है।

इसलिए अपने अंदर अच्छी बातों की आदत डालो ताकि तुम भी पिछले अच्छे लोगों के रास्ते पर चलने वाले बनकर अपने बाद वालों को फ़ाएदा पहुँचा सको ताकि वह लोग तुम्हें देखकर तुम्हारी आदतें अपने अंदर पैदा करें, तुम से अच्छाई की उम्मीद रखें और दुश्मन तुम से डरे रहें।

ख़बरदार! अच्छी बातों को सीखने और अपने अंदर पैदा करने में सुस्ती मत दिखाना और अच्छी बातों से हटकर अपने अंदर किसी भी चीज़ का शौक़ न उभरने देना।

अगर लोग दुनिया में तुम्हें पीछे कर दें और तुम से तुम्हारी दुनिया को छीन लें तो दुखी मत होना बल्कि हर पल यह कोशिश करना कि मरने के बाद वाली दुनिया में तुम्हें कोई न हरा पाए और तुम्हारी आख़िरत को तुम से कोई न छीनने पाए। आख़िरत के हाथ से निकल जाने का मतलब यह है कि तुमने इल्म को उस जगह से हासिल नहीं किया है जहाँ से हासिल करना चाहिए था। अपने दिन-रात के एक हिस्से को इल्म (सीखने और पढ़ने) के लिए भी ज़रूर रखो क्योंकि हर दिन कुछ नया सीखने की ललक को छोड़ देने से

हटकर दुनिया में ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो आदमी के इल्म को बर्बाद कर सके क्योंकि इल्म को छोड़ देने का मतलब यह होता है कि आदमी ने जो कुछ सीखा है वह भी उसके हाथ से निकल जाएगा।

किसी झगड़ालू आदमी के साथ कभी बहस मत करना, किसी अक़्लमंद के साथ कभी झगड़ा मत करना, किसी मालदार के साथ कभी दुश्मनी मत करना, किसी ज़ालिम[1] के साथ उठना-बैठना मत रखना और न ही उसके साथ दोस्ती करना, बुराईयों में डूबे किसी आदमी के साथ कभी भाईचारा मत निभाना, किसी बदनाम आदमी के साथ मेल-जोल मत रखना और इल्म को इस तरह से संभालकर व छुपाकर रखना जैसे अपनी दौलत को छुपाकर रखते हो।

ऐ बेटा! अल्लाह से इस तरह से डरते रहा करो जैसा उससे डरने का हक़ है यानी जैसे अल्लाह से डरना चाहिए कि अगर तुम जिन्नात व आदमियों की नेकियों के बराबर नेकियाँ[2] भी क़यामत में अपने साथ लेकर आओ तो अल्लाह के अज़ाब[3] से डरते रहो। इसी तरह जहाँ तक अल्लाह से उम्मीद लगाए रखने की बात है तो इतनी उम्मीद लगाकर रखना कि अगर जिन्नात व आदमियों के बराबर गुनाहों का ढेर अपने साथ लेकर आओ तो भी तुम्हें यह उम्मीद हो कि अल्लाह तुम्हें माफ़ कर देगा।

---

[1] अत्याचारी
[2] अच्छाईयाँ
[3] प्रकोप

इतना सुनने के बाद हकीम लुक़मान के बेटे ने कहा कि ऐ बाबा! मैं इतनी ताक़त कहाँ से लाऊँगा कि डर व उम्मीद को अपने अंदर एक साथ इकट्ठा कर लूँ क्योंकि मेरे पास तो बस एक ही दिल है?

हकीम लुक़मान ने कहा कि ऐ बेटा! अगर किसी मोमिन के दिल को बाहर निकाल कर चीरा जाए तो उसमें से दो तरह के नूर (रौशनी) फूटेंगें: एक अल्लाह से डरने की वजह से फूटने वाला नूर और दूसरा अल्लाह से उम्मीद लगाए रखने की वजह से फूटने वाला नूर। अगर इन दोनों को तौला जाए तो इन दोनों के वज़न में रत्ती बराबर भी फ़र्क़ दिखाई नहीं पड़ेगा। इसलिए जो भी अल्लाह पर ईमान ले आता है वह अल्लाह की बताई सारी बातों को मान लेता है और जो अल्लाह की बताई सारी बातों को मान लेता है वह उन बातों पर चलता भी है। साथ ही अगर कोई अल्लाह की बताई बातों पर न चले तो इसका मतलब यह है कि वह अल्लाह की बताई बातों पर भरोसा नहीं करता है क्योंकि आदमी का चाल-चलन और उसकी आदतें ही उसके दिल में पनप रही बातों का पता देती हैं। इसलिए जो भी अल्लाह पर दिल से ईमान ले आता है वह सच्चे दिल से उसके बताए रास्ते पर चलने लगता है और अगर कोई अल्लाह के लिए ऐसा करे तो इसका मतलब यह है कि वह अल्लाह के ऊपर दिल से ईमान ले आया है। इसी तरह अगर कोई अल्लाह के बताए रास्ते पर चले तो इसका मतलब यह है कि वह आदमी अल्लाह से डरने वाला है

और जो भी अल्लाह से डरता है वह अल्लाह से मोहब्बत करने वाला होता है। जो अल्लाह से मोहब्बत करने वाला होता है वह अल्लाह की हर बात को मानता है और जो अल्लाह की हर बात को मानता है वह जन्नत में जाने वाला होता है और अल्लाह भी उससे ख़ुश रहता है। अब अगर कोई अल्लाह की ख़ुशी को न पाना चाहे तो उस पर अल्लाह का अज़ाब आसानी से हो जाता है और मैं अल्लाह के ग़ज़ब[1] से उसकी पनाह चाहता हूँ।

ऐ मेरे प्यारे बेटा! दुनिया से अपना दिल मत लगाना और इसके पीछे मत भागना क्योंकि अल्लाह की नज़र में जितनी गिरी हुई चीज़ दुनिया है उतनी गिरी हुई कोई दूसरी चीज़ नहीं है। क्या तुम नहीं देखते हो कि अल्लाह ने दुनिया की नेमतों को अपने अच्छे बंदों के लिए सवाब नहीं बनाया है और न ही दुनिया की तकलीफ़ों व मुसीबतों को गुनाहगारों के लिए अज़ाब बनाया है।[2]

एक दूसरी हदीस में यह भी लिखा हैः

हज़रत लुक़मान[अ०] ने अपने बेटे नाफ़ान से कहा कि ऐ बेटा! अपने दुश्मन के लिए हर पल एक हथियार तैयार रखना ताकि जब भी वह तुम्हारे ऊपर हमला करे तुम उसे धूल चटा सको और वह हथियार यह है कि उससे खुले दिल के साथ हाथ मिलाओ और आगे बढ़कर उससे तपाक से मिलो,

---

[1] प्रकोप

[2] तफ़सीरे क़ुम्मी, 162/2

उससे दूरियाँ न बनाओ और न ही उसके साथ दुश्मनी रखो ताकि तुम्हारे ख़िलाफ़ उसके दिल में जो कुछ भरा हुआ है वह ख़ुद अपने हाथ से तुम्हारे सामने ही निकाल दे और फिर ख़ुद ही घाटे में रहे।

ऐ बेटा! मैंने लोहा, पत्थर और दूसरा हर तरह का बोझ उठाया है मगर मुझे बुरे पड़ोसी से भारी कोई बोझ नहीं लगा। इसी तरह मैंने हर कड़वी चीज़ का मज़ा चखा है मगर तकलीफ़ों और दुनिया वालों के सामने हाथ फैलाने से ज़्यादा मुझे कोई भी चीज़ कड़वी नहीं लगी।

एक हदीस में लिखा हैः

हज़रत लुक़मान[अ०] ने अपने बेटे से कहा कि ऐ बेटा! अगर तुम्हारे हज़ार दोस्त हों तब भी कम हैं लेकिन अगर एक दुश्मन भी हो तो वही बहुत है।

एक हदीस में इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैंः

इमाम अली[अ०] ने फ़रमाया है कि अपने बेटे को हकीम लुक़मान ने जो नसीहतें की थीं उन में से एक यह थी कि ऐ बेटा! जिस आदमी को अल्लाह के राज़िक़[1] होने में शक हो या जिसकी नियत अल्लाह से रोज़ी मांगने में कमज़ोर हो उसे इस बात से सीख लेना चाहिए कि अल्लाह ही ने उसे कुछ न होने से होने में बदला है (यानी वह सिरे से था ही नहीं लेकिन अल्लाह ने उसे पैदा किया है)। अल्लाह ने उसे तीन ऐसी हालतों में रोज़ी-रोटी दी है जिन में से किसी एक में भी वह

---

[1] रोज़ी-रोटी देने वाले

अपने आप से कुछ नहीं कर सकता था। इसलिए आदमी को यह बात समझ लेना चाहिए कि चौथी हालत में भी अल्लाह ही उसे रोज़ी-रोटी देगा। इन तीन हालतों में से पहली वाली हालत है जब वह अपनी माँ के पेट में था। माँ के पेट में भी पेट भरने वाला अल्लाह ही था और इस हालत में भी अल्लाह ने उसे ऐसी आराम वाली जगह पर रखा था जहाँ न उसे गर्मी कोई नुक़सान पहुँचा सकती थी और न ठंडक। दूसरी हालत वह है जब बच्चा अपनी माँ के पेट से बाहर आ जाता है। यहाँ अल्लाह उसका पेट भरने के लिए उसकी माँ के सीने में पाक दूध रख देता है और बस यही दूध उसके लिए काफ़ी होता है। इस पूरे वक़्त में अल्लाह ही उसे पालता-पोसता है और वह बड़ा होता जाता है जबकि आदमी के पास न अपनी कोई ताक़त होती है और न कोई ऐसा तरीक़ा कि वह अपने आप से अपनी रोज़ी-रोटी कमा सके या किसी तरह के नुक़सान को अपने से दूर कर सके। तीसरी हालत तब शुरू होती है जब बच्चा अपनी माँ का दूध पीना बंद कर देता है। इसके बाद अल्लाह उसके माँ-बाप के हाथों कमाई रोज़ी-रोटी से उसका पेट भरता है जो पूरी हमदर्दी व मोहब्बत से अपनी सारी कमाई उस पर लगा देते हैं और वह भी इस तरह कि बहुत से मामलों में तो वह अपने बच्चे को अपने आप से भी आगे रखते हैं। यहाँ तक कि बच्चा समझदार और बड़ा हो जाता है जिसके बाद वह ख़ुद ही कमाने लगता है। जब वह यहाँ तक पहुँचता है तो हालात का घेरा अपने ऊपर तंग कर लेता है और अपने

पालने वाले के बारे उल्टा-सीधा सोचने लगता है जिसका नतीजा यह होता है कि वह अपने माल में से अल्लाह का हक़[1] देना भी बंद कर देता है और इस डर से कि कहीं कमाई कम न पड़ जाए अपने और अपने घर वालों के बारे में कंजूसी करने लगता है क्योंकि उसे इस बात का भरोसा नहीं होता कि वह जो कुछ अल्लाह के लिए ख़र्च करेगा अल्लाह उसके बदले में उसे दुनिया व आख़िरत में बदला दे देगा। ऐ बेटा! ऐसा बंदा कितना बुरा बंदा है![2]

ऐ मेरे बेटा! हर चीज़ की एक निशानी होती है जिससे वह चीज़ पहचानी जाती है और वह निशानी उस चीज़ के लिए गवाही देती है।

जान लो कि दीन की भी तीन निशानियाँ हैः इल्म[3], अपने इल्म पर चलना और ईमान।

ईमान की भी तीन निशानियाँ हैः

अपने पालने वाले को पहचानना, यह जानना कि अल्लाह किन कामों को पसंद करता है और कौन-कौन से कामों को पसंद नहीं करता है।

अपने इल्म पर चलने वाले की भी तीन निशानियाँ हैः नमाज़, रोज़ा और ज़कात।

जो आदमी अपने ऊपर इल्म के दरवाज़े बंद कर लेता है और आलिम (जानने वाला) नहीं होता उसकी भी तीन निशानियाँ हैः अपने से ज़्यादा जानने वाले के साथ झगड़ा करता है, ऐसी बातें करता है जो उसकी सोच-समझ से ऊँची होती हैं

---

[1] अधिकार

[2] ख़िसाल/122

[3] ज्ञान

और ऐसे काम करने लगता है जिन्हें वह कर ही नहीं सकता।

ज़ालिम की भी तीन निशानियाँ हैंः अपने से ऊँचे दर्जे वाले पर ज़ुल्म[1] करता है जबकि उसकी बात भी नहीं मानता, अपने नीचे वालों को अपने कंट्रोल में करने के लिए उन पर मुसीबतों के पहाड़ तोड़ता है और ज़ालिमों की मदद करता है।

मुनाफ़िक़ (दो मुँह वाले आदमी) की भी तीन निशानियाँ हैंः उसकी ज़बान उसके साथ नहीं होती, उसका दिल उसके कामों से मेल नहीं खाता और अकेले में वह कुछ होता है मगर दूसरों के साथ कुछ और।

गुनाह करने वाले की भी तीन निशानियाँ हैंः दूसरों के माल में ईमानदारी नहीं दिखाता, झूठ बोलता है और जो कुछ कहता है उसके उलट करता है।

दिखावा करने वाले की भी तीन निशानियाँ हैंः जब अकेला होता है तो अल्लाह की इबादत करने में सुस्ती दिखाता है, जब लोगों के बीच में होता है तो बड़े दिल से इबादत करता है और जो काम भी करता है इसलिए करता है ताकि देखने वाले उसकी तारीफ़ करें।

हसद करने वाले (जलने वाले) की भी तीन निशानियाँ हैंः लोगों की पीठ पीछे उनकी बुराई करता है (ग़ीबत), सामने होता है तो उनकी चापलूसी करता है और जब किसी पर कोई मुसीबत पड़ती है तो ख़ुश होता है।

---

[1] अत्याचार

फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले की भी तीन निशानियाँ हैंः ऐसी चीज़ें ख़रीदता है जो उसकी हैसियत से ज़्यादा होती है, ऐसे कपड़े पहनता है जो उसके लिए ठीक नहीं होते और ऐसी चीज़ें खाता है जो उसकी शान से मेल नहीं खातीं।

काहिल की भी तीन निशानियाँ हैंः अच्छे कामों में सुस्ती करता है और जब तक डराया न जाए तब तक काम को टालता रहता है और इतनी सुस्ती दिखाता है कि वह काम ही बर्बाद हो जाता है और कामों को इतना बर्बाद करता है कि आख़िर में गुनाहगार[1] बन जाता है।

ग़ाफ़िल[2] की भी तीन निशानियाँ हैंः इबादतों में शक करता है, अल्लाह की याद को अंदेखा किए रहता है और अच्छे कामों को भुला देता है।[3]

ऐ बेटा! ऐसा कामों के पीछे मत भागो जिन्हें करने की तुम्हारे अंदर ताक़त ही न हो और जिन्हें पूरा करने के तुम्हारे पास कोई सहारा न हो। इसी तरह ऐसे कामों को बिल्कुल मत छोड़ना जिन्हें तुम कर सकते हो और जिन्हें पूरा करने के तुम्हारे पास रास्ते भी हों ताकि तुम्हारी राय ग़लत और तुम्हारी अक़्ल बर्बाद न हो।

ऐ बेटा! जिन कामों को अल्लाह ने हराम बताया है उनसे दूर रहकर, दीन की अच्छी बातों को सीखकर, अपनी इंसानियत[4] को संभालकर, अपने आप को गुनाहों से बचाकर और बुरी बातों

---

[1] गुनाह करने वाला
[2] अंदेखा करने वाला आदमी
[3] ख़िसाल/121
[4] मानवता

व बुरे कामों से दूर रहकर अपने दुश्मन से लड़ने के लिए ताक़त पैदा करो। अपने राज़ों को छुपाकर रखा करो और अपने भीतर को अच्छा बनाओ क्योंकि यह बात तय है कि अगर तुम ऐसा कर लोगे तो अल्लाह तुम्हारी कमियों को तुम्हारे दुश्मन से छुपा लेगा और उसे तुम्हारे अंदर कोई लड़खड़ाहट दिखाई नहीं पड़ेगी लेकिन यह भी ध्यान रहे कभी भी दुश्मन की चालों से अंजान मत रहना कि कहीं ऐसा न हो कि वह सोता हुआ पाकर तुम पर छा जाए जिसके बाद वह तुम्हारा कोई बहाना नहीं मानेगा, फिर तुम्हें हर हाल में उसके राज़ी और ख़ुश होने का ध्यान रखना पड़ेगा।

ऐ मेरे प्यारे बेटे! जिस काम में तुम्हारी भलाई हो उस में जितनी भी मेहनत करना पड़े या जितनी भी तकलीफ़ उठाना पड़े उसे कम ही समझना। इसी तरह जो काम तुम्हारे घाटे में हो अगर उस काम में थोड़ी सी भी मेहनत करना पड़े तो उसे बहुत समझना।

ऐ बेटा! लोगों के साथ उसी तरह से मिला करो जिस तरह से वह आपस में मिला करते हैं। लोगों से ऐसी किसी भी बात की उम्मीद मत रखा करो जिसका पूरा करना उनके लिए भारी हो और अगर तुम ने ऐसा किया तो तुम्हारे साथी एक-एक करके तुम से चिढ़ने लगेंगे और दूर भागने लगेंगे। फिर तुम अकेले पड़ जाओगे जिसके बाद तुम्हारा ऐसा कोई भी दोस्त नहीं बचेगा जिससे तुम अपने दिल की बात कह सको और न ही कोई ऐसा भाई बचेगा जो तुम्हारी मदद कर सके। जब तुम अकेले

हो जाओगे तो फिर तुम्हारी कोई इज़्ज़त नहीं रहेगी।

ऐसे किसी भी आदमी से माफ़ी मत मांगना जो माफ़ करना ही न जानता हो और जो अपने ऊपर तुम्हारा कोई हक़[1] ही न समझता हो।

अपने कामों में किसी भी ऐसे आदमी से मदद मत मांगना जो उस मदद के बदले में तुम से कोई उजरत (मज़दूरी) न ले क्योंकि जब ऐसा होगा तो वह तुम्हारे काम को अपना काम समझकर करेगा। इस तरह से उसे इस दुनिया में भी फ़ाएदा होगा और मरने के बाद क़यामत में भी उसे सवाब मिलेगा। इसलिए वह पूरी मेहनत से तुम्हारा काम पूरा करना चाहेगा।

अगर तुम अपने लिए कोई साथी या दोस्त चुनना चाहो और उससे अपने कामों में मदद लेना चाहो तो ऐसे साथी चुनना जो हममर्द हों, पैसे वाले हों, इज़्ज़तदार हों, समझदार हों और पाक हों क्योंकि अगर उन्हें तुम से कोई फ़ाएदा पहुँचेगा तो वह तुम्हारा शुक्रिया अदा करेंगे और अगर तुम कहीं दूर चले गए तो तुम्हें याद करेंगे।[2]

ऐ बेटा! जिन पढ़े-लिखे लोगों से तुम ने दोस्ती की है और जिन्हें तुमने अपना साथी बनाया है, अगर वह तुम्हारे साथ वफ़ादार हों तो तुम्हें भी उनकी कमियों को दूर करने का ध्यान रखना चाहिए। अगर यह लोग तुम से फिर जाएं तो इनसे दूर रहना क्योंकि दूसरों के मुक़ाबले में इनकी

---

[1] अधिकार
[2] क़-स-सुल अम्बिया, रावन्दी/193

दुश्मनी से तुम्हें ज़्यादा घाटा होगा क्योंकि तुम्हारे बारे में यह लोग जो कुछ भी कह देंगे लोग उसे मान लेंगे इसलिए कि यह लोग तुम्हारे सारे हालात जान चुके होंगे।

ऐ मेरे बेटे! अगर तुम्हारे दोस्तों व साथियों के हाथों तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचे तो दुखी मत होना, उनके साथ कोई बुरा बर्ताव मत करना और सब्र[1] का दामन अपने हाथ से मत छूटने देना क्योंकि अगर तुम ने ऐसा किया तो तुम्हारी दोस्तियाँ ख़त्म होती चली जाएंगी। इस तरह के मामलों में कोई फ़ैसला लेने में देरी करना अपने ऊपर वाजिब कर लो। किसी भी मामले में नतीजे पर ध्यान दिए बिना कभी भी जल्दी मत करना। अपने भाईयों और दोस्तों के हाथों पहुँचने वाले दुखों पर सब्र किया करो और सब लोगों के साथ अच्छे अख़लाक़[2] से मिला करो।

ऐ बेटा! अगर तुम्हारे पास इतना पैसा न हो कि तुम उससे अपने रिश्तेदारों की मदद कर सको और अपने मोमिन भाईयों पर ख़र्च कर सको तो इन लोगों के साथ अच्छी तरह से मिलने-जुलने और उठने-बैठने में कोई कमी मत करना क्योंकि जिस आदमी का अख़लाक़ अच्छा होता है उससे सारे अच्छे लोग मोहब्बत करते हैं और ऐसे आदमी से बुरे लोग दूर रहते हैं। जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है उस पर हमेशा राज़ी रहना। हमेशा ख़ुशी-ख़ुशी ज़िंदगी के पल बिताना।

---

[1] धीरज

[2] आचार-सदाचार

अगर तुम सारी दुनिया की इज़्ज़त पाना चाहते हो तो उन चीज़ों की लालच अपने दिल से निकाल दो जो दूसरों के पास तो हैं मगर तुम्हारे पास नहीं हैं क्योंकि अल्लाह के जितने भी रसूल इस दुनिया में आए हैं वह सब के सब इसी लिए इतने ऊँचे दर्जे पर पहुँचे थे क्योंकि उन्होंने इन सारी चीज़ों की लालच अपने दिलों से निकाल फेंकी थी।

ऐ बेटा! अगर किसी मामले में तुम्हें किसी बादशाह से कोई काम पड़ जाए तो उसकी बहुत ज़्यादा ख़ुशामद मत करना और उसके आगे बहुत ज़्यादा हाथ–पैर मत जोड़ना। इसी तरह अगर उससे कुछ मांगना हो तो उस वक़्त तक न मांगना जब तक कि मांगने का सही वक़्त न आ जाए और ऐसा वक़्त वह होता है जब वह तुम से ख़ुश हो और उसका दिल किसी भी बात से दुखी न हो। अगर तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो और वह तुम्हें न मिले तो दुखी मत होना क्योंकि इस बात का पूरा होना अल्लाह के हाथ में है। हर काम का एक वक़्त होता है और जब वह वक़्त आ जाता है तो वह काम अपने आप पूरा हो जाता है मगर तुम्हें चाहिए कि अल्लाह को हर पल याद करते रहो और उसी से दुआ मांगो और जब दुआ मांगो तो गिड़गिड़ा–गिड़गिड़ाकर और आसमान की तरफ़ हाथ उठाकर।

ऐ बेटा! यह दुनिया बड़ी छोटी सी है और तुम्हारी उम्र भी बहुत कम है। इसलिए अपनी छोटी सी उम्र इस छोटी सी दुनिया को पाने में मत लगाओ।

ऐ बेटा! हसद (दूसरे से जलने) से बचो और हसद को अपनी आदत मत बनाओ। दुनिया वालों के साथ बुरे बर्ताव से भी बचो और इसे अपनी पसंद मत बनाओ क्योंकि यह दोनों बातें ऐसी हैं जिनसे बस तुम्हें घाटा होगा, किसी और को कोई घाटा नहीं होगा। जब तुम्हें ख़ुद तुम्हारे ही हाथों से घाटा होगा तो असल में तुम ख़ुद अपने ही हाथों अपने दुश्मन का काम कर रहे होगे क्योंकि जितना नुक़सान तुम्हें ख़ुद अपने हाथों से होगा उतना नुक़सान किसी और के हाथों बिल्कुल नहीं हो सकता।

ऐ बेटा! अगर नेकी या अच्छाई करना चाहते हो ऐसे आदमी के साथ करो जो उस अच्छाई के लायक़ हो। साथ ही हमेशा यह भी ध्यान रखना कि अगर कोई अच्छा काम करो तो कभी भी अपनी दुनिया को बनाने या चमकाने के लिए मत करना बल्कि बस अल्लाह के लिए करना। अगर दूसरों पर एहसान (भलाई) करना हो तो बीच का रास्ता लेकर चलना यानी न तो यह करना कि किसी की मदद ही न करो और न ही यह करना कि किसी को इतना दे दो कि ख़ुद तुम ही ख़ाली हाथ हो जाओ।

ऐ बेटा! सब से अच्छा अख़लाक़ अल्लाह का दीन है जिसे समझना हर एक के लिए ज़रूरी है। अल्लाह के दीन की मिसाल उगे हुए पेड़ की सी है। इस तरह अल्लाह पर ईमान उस पेड़ का वह पानी है जिससे पेड़ ज़िंदा रहता है। नमाज़ इस पेड़ की जड़ है जिस पर वह टिका हुआ है। इस पेड़ का तना ज़कात है। अल्लाह के नाम पर मोमिन

भाईयों के साथ भाईचारा इस पेड़ की टहनियाँ हैं और अच्छा अख़लाक़ पत्ते हैं। इस पेड़ के फल गुनाहों से दूर रहना है और यह बात तो तुम जानते ही हो कि कोई भी पेड़ उस वक़्त तक पूरा नहीं हो सकता जब तक उस पर अच्छे फल न लग जाएं। इसी तरह आदमी का दीन भी उस वक़्त तक पूरा नहीं हो सकता जब तक कि वह अल्लाह के बताए हराम कामों से दूर न हो जाए।[1]

ऐ बेटा! सब से बड़ी मुश्किल अक़्ल व समझ का काम न करना है, सब से बड़ी मुसीबत दीन की मुसीबत है, सब से बड़ी आफ़त ईमान की आफ़त है और सब से ज़्यादा फ़ाएदा पहुँचाने वाली चीज़ दिल का मालामाल होना है। इसलिए अपने दिल को इल्म, यक़ीन और अच्छी बातों से मालामाल कर लो। दुनिया की रोज़ी-रोटी से जो कुछ भी मिल जाए उसी से अपना दिल भर लो और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है उस पर राज़ी हो जाओ। बेशक! अगर कोई आदमी चोरी करता है या लोगों के साथ बेईमानी करता है तो अल्लाह उसकी उस हलाल रोज़ी को भी रोक लेता है जो उसने उसके लिए तय कर रखी थी जिसके बाद उस आदमी के लिए गुनाह ही गुनाह रह जाता है। अगर वह सब्र से काम लेता तो हलाल रोज़ी अपने आप उस तक पहुँच जाती और वह दुनिया व आख़िरत (क़यामत) के अज़ाब से भी बच जाता।

---

[1] क़-स-सुल अम्बिया, रावन्दी/195

ऐ बेटा! अल्लाह की बात मानना तो सच्चे दिल से मानना और अपने दिल को किसी भी गुनाह से गंदा मत होने देना। अल्लाह के हुक्म को मानने में अल्लाह वालों के रास्ते पर चलना और देखना कि वह कैसे इस रास्ते पर चलते हैं क्योंकि अल्लाह वालों के पीछे चलकर ही आदमी अल्लाह के रास्ते पर चल सकता है। साथ ही इस रास्ते पर चलना तो इल्म व समझदारी के साथ और पूरे ध्यान से अपने इल्म की हिफ़ाज़त[1] भी करते रहना और हिफ़ाज़त भी ऐसी कि जिसमें किसी भी तरह की कोई हिमाक़त[2] न मिली हुई हो। अपने इल्म को ध्यान से सजोए रखना जिसमें किसी भी तरह की बेवक़ूफ़ी व नासमझी न मिली हुई हो। इसके दरवाज़े को समझदारी के साथ मज़बूती से बंद करके रखना ताकि इसमें कोई कमी न आने पाए और अपनी समझदारी को हमदर्दी व नर्मी के साथ मिलाए रखना जिसमें किसी भी तरह की कोई सख़्ती न हो।

ऐ बेटा! कभी भी किसी जाहिल के हाथों किसी के पास अपना कोई मैसेज न भेजना। अब अगर तुम्हें इस काम के लिए कोई समझदार आदमी न मिले तो फिर ख़ुद ही उठकर जाना और जाकर अपनी ज़बान से अपनी बात कहना। ऐ बेटा! बुराई से दूर रहो ताकि ख़ुद बुराई भी तुम से दूर रहे।[3]

---

[1] बचाव

[2] मूर्खता

[3] क़-स-सुल अम्बिया, रावन्दी/196

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया हैः

हकीम लक़मान से पूछा गया कि लोगों में सब से अच्छा आदमी कौन होता है?

हकीम लुक़मान ने जवाब दिया कि ग़नी यानी मालदार मोमिन।

पूछने वाले ने पूछा कि क्या आप पैसे वाले मालदार मोमिन की बात कर रहे हैं?

हकीम लुक़मान ने कहा कि नहीं! मैं इल्म के हिसाब से मालदार होने की बात कर रहा हूँ क्योंकि अगर लोगों को उसकी ज़रूरत होगी तो वह अपने इल्म से उन्हें फ़ाएदा पहुँचाएगा और अगर लोगों को उसकी ज़रूरत नहीं होगी तो उसका इल्म ख़ुद उसके लिए ही काफ़ी होगा।

फिर पूछने वालों ने पूछा कि अच्छा! सब से बुरा आदमी कौन होता है?

हकीम लुक़मान ने जवाब दिया कि सब से बुरा आदमी वह है जिसे इस बात की परवाह ही न हो कि लोग उसे गुनाहगार (बुरे काम करने वाला) समझते हैं।[1]

हकीम लुक़मान ने अपने बेटे से यह भी फ़रमाया था कि ऐ बेटा! जब भी कुछ लोगों के साथ किसी सफ़र पर जाना तो उन लोगों से अपने और उनके मामलों में ख़ूब राय-मश्वरा करना। अपने सफ़र के साथियों के साथ ख़ूब मुस्कुराकर और खिले चेहरे के साथ बातें करना। रास्ते के लिए अपने साथ जो चीज़ें या सामान लेकर जाना उसमें कंजूसी मत करना और अपने साथियों के

---

[1] क़-स-सुल अम्बिया, रावन्दी/197

साथ मिल–बांट कर इस्तेमाल करना। अगर वह लोग तुम्हें बुलाएं तो फ़ौरन उनकी बात सुनना। अगर तुम से किसी काम में मदद मांगें तो फ़ौरन आगे बढ़कर उनकी मदद करना और तीन बातों में उनसे बढ़कर रहनाः ख़ामोशी में, नमाज़ पढ़ने में और अपनी चीज़ों में से उन्हें देने में जैसे तुम्हारे जानवर और तुम्हारा सामान वग़ैरा। अगर किसी सही बात पर वह लोग तुम्हारी गवाही लेना चाहें तो अपनी गवाही दे देना। अगर किसी बात में तुम से राय–मश्वरा लेना चाहें तो पूरे ध्यान से ऐसी राय देना जिसमें उनकी भलाई हो। उनकी भलाई में अपनी राय देने में जल्दी मत करना और ख़ूब सोच–समझकर अपनी राय उनके सामने रखना। उनकी बात का जवाब उस वक़्त तक न देना जब तक कि तुम वहाँ से उठ न जाओ, चल–फिर न लो, सो न जाओ और नमाज़ पढ़ने में न लग जाओ और सारे हालात में उनकी बात पर ख़ूब ध्यान से सोचते करते रहना क्योंकि कोई आदमी किसी के लिए अपनी राय या नसीहत को खरा नहीं करता तो अल्लाह उसकी अक़्ल को छीन लेता है और अमानतदारी को उससे वापस ले लेता है। जब तुम देखना कि तुम्हारे साथी पैदल चल रहे हैं तो तुम भी उनके साथ पैदल चलने लगना। जब देखना कि कोई काम कर रहे हैं तो उस काम में उनका हाथ भी बंटाना। जब देखना कि वह लोग किसी को सदक़ा या क़र्ज़ा दे रहे हैं तो तुम भी इस काम में उनका साथ देना। जो उम्र में तुम से बड़ा हो उसकी बात को ध्यान से सुनना। जब भी वह लोग तुम से कोई काम करने को कहें या तुम

से कोई चीज़ मांगे तो मना मत करना क्योंकि मना करना आदमी की ख़राबी की निशानी होती है। अगर कभी रास्ता भूल जाना तो सवारियों से नीचे उतर जाना। फिर अगर तुम्हें पता न हो कि कौन सा रास्ता सही है तो ठहर जाना और आपस में राय-मश्वरा करना। इस बीच अगर कोई रास्ता बताने वाला आदमी मिल जाए तो उसके बताए रास्ते पर आँखें बंद करके भरोसा मत कर लेना क्योंकि अकेला आदमी जंगल में लोगों को और भी रास्ता भटका देता है। कभी-कभी ऐसा आदमी चोरों का जासूस भी होता है और शैतान भी होता है जो चाहता है कि तुम्हें तुम्हारे रास्ते से भटका कर तुम्हें और बड़ी मुसीबतों में डाल दे। दो आदमी हों तो उनसे भी बचकर रहना लेकिन अगर तुम्हें उनके अंदर सच्चाई की निशानियाँ दिखाई पड़ें तो उन पर भरोसा कर लेना और सच्चाई की यह निशानियाँ तो मैं तुम्हें नहीं बता सकता क्योंकि अक़्ल का कमाल यह है कि वह जैसे ही अपनी आँखों से किसी चीज़ को देखती है तो फ़ौरन सही बात को ले लेती है क्योंकि जिन बातों को आदमी अपनी आँखों से देख लेता है उन बातों को वह आदमी समझ ही नहीं सकता जो मौक़े पर मौजूद ही न हो।

ऐ बेटा! अगर नमाज़ का वक़्त आ जाए तो फिर किसी भी काम की वजह से अपनी नमाज़ में देरी मत किया करो और वक़्त होते ही फ़ौरन नमाज़ पढ़ लिया करो ताकि इस काम से आराम पा लो क्योंकि नमाज़ दीन की असल है। अगर

तुम जंग के मैदान में हो तब नमाज़े जमाअत को भी मत छोड़ना।

अगर किसी जानवर की सवारी करना तो उस पर सोना मत क्योंकि जानवर की पीठ पर बड़ी जल्दी ज़ख़्म हो जाता है और यह काम समझदारों का है भी नहीं। हाँ! अगर चाहो तो उसकी ज़ीन (काठी) पर ज़रूर सो सकते हो मगर अपने बदन के जोड़-बंद को सीधा रखना। फिर जब अपनी मंज़िल के पास पहुँच जाना तो जानवर से नीचे उतर आना और पैदल ही आगे बढ़ना। वहाँ पहुँचकर अपने खाने-पीने से पहले जानवर को चारा देना। रास्ते में अगर कहीं ठहरना हो तो ऐसी जगह पर रूकना जहाँ की ज़मीन अच्छे रंग वाली, जिसकी मिट्टी नर्म और जहाँ घास ज़्यादा हो। जानवर से नीचे उतरना तो पहले दो रकअत नमाज़ पढ़ना और उसके बाद आराम करना। अगर पेट साफ़ करना हो तो लोगों से बहुत दूर जाना। फिर जब उस जगह से आगे बढ़ना हो तो एक बार फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ना और उसके बाद की उस जगह को अलविदा कहना जहाँ ठहरे थे। फिर उस जगह और वहाँ रहने वालों पर सलाम करना क्योंकि ज़मीन पर हर जगह कुछ न कुछ फ़रिश्ते होते हैं। अगर हो सके तो जब तक कुछ सदक़ा न दे लेना तब तक खाना मत खाना। जब तक अपनी सवारी पर सवार रहना अल्लाह की किताब को पढ़ते रहना।

हर काम के साथ अल्लाह की तस्बीह पढ़ते रहा करो और उसे याद करते रहा करो। जब अपने काम को पूरा कर लिया करो तो अल्लाह से दुआ

भी मांगा करो। इस बात का ध्यान रखना कि कभी रात के शुरूआती हिस्से में सफ़र के लिए अपने घर से मत निकलना बल्कि आधी रात से रात के आख़िरी हिस्से तक सफ़र करना और रास्ते में कभी भी अपनी आवाज़ ऊँची मत करना।[1]

एक हदीस में इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं:

एक बार हकीम लुक़मान से पूछा गया कि जो बातें आप लोगों को बताते हैं उन में से एक ऐसी कौन सी बात है जिस पर आप सब से ज़्यादा भरोसा करते हैं और कभी भी उस बात को नहीं छोड़ते ?

हकीम लुक़मान ने कहा कि मैं अपना ऐसा कोई काम कभी नहीं करता जिसे अल्लाह ने अपने ज़िम्मे ले लिया है और मैं ऐसा कोई काम कभी नहीं छोड़ता जिसका ज़िम्मा अल्लाह ने मुझे दिया है।[2]

एक दूसरी हदीस में है कि हकीम लुक़मान ने अपने बेटे से यह भी कहा था कि ऐ बेटा! सौ आदमियों से दोस्ती कर लेना मगर दुश्मनी एक आदमी से भी मत करना।

ऐ बेटा! तुम्हारे अख़लाक़ और ख़ुल्क़ (सदाचार व अच्छी आदतों) से हटकर कोई दूसरी चीज़ तुम्हारे काम नहीं आएगी। तुम्हारा अख़लाक़ तुम्हारे और तुम्हारे अल्लाह के बीच तुम्हारा दीन है। तुम्हारी अच्छी आदतें दूसरे लोगों और तुम्हारे बीच

---

[1] उसूले काफ़ी, 8/348, मजमउल बयान, 4/317
[2] क़ुर्बुल अस्नाद/72

पाया जाने वाला (रिश्ता) है। इसलिए लोगों के साथ दुश्मनी मत रखना और अच्छी आदतों को हमेशा सीखते रहना।

ऐ बेटा! अच्छे लोगों का ग़ुलाम बन जाना मगर कभी भी बुरे लोगों का बेटा मत बनना।

ऐ बेटा! अगर कोई तुम्हें अपनी कोई चीज़ संभाल कर रखने के लिए दे तो उस चीज़ को उसी हालत में वापस करना जिस हालत में उसे लिया था ताकि तुम्हारी दुनिया और आख़िरत ठीक-ठाक रहे। अमानतदार बनकर रहना ताकि मालदार बन सको और किसी के मोहताज न बनो।[1]

एक हदीस में इमाम मुसा काज़िम[अ०] फ़रमाते हैंः

हकीम लुक़मान ने अपने बेटे से कहा था कि ऐ बेटा! लोग अल्लाह के अज़ाब[2] से डरते क्यों नहीं हैं जबकि इस अज़ाब का उनसे वादा भी कर दिया गया है और इसके बाद भी लोगों की हालत हर दिन गिरती ही जा रही है? लोग अल्लाह के वादों पर ध्यान क्यों नहीं देते हैं जबकि बड़ी जल्दी इन सब की उम्र ढल जाएगी?

ऐ बेटा! कभी भी पढ़े-लिखों और समझदारों के सामने अपनी बड़ाई करने या नासमझों से झगड़ा करने या लोगों के बीच ख़ुद को ऊँचा दिखाने के लिए इल्म हासिल मत करना और इसी तरह इल्म में दिलचस्पी न होने की वजह से भी इसे मत छोड़ना।

---

[1] मआनी अल-अख़बार/253

[2] प्रकोप

ऐ बेटा! लोगों के बीच जलसों व प्रोग्रामों में जाया करो और ध्यान से देखा करो, अगर तुम्हें वहाँ लोग अल्लाह की याद में डूबे हुए मिलें तो उनके साथ बैठ जाया करो। अगर तुम पढ़े-लिखे इंसान हो तो इन लोगों के साथ उठने-बैठने से तुम्हारा इल्म तुम्हें फ़ाएदा पहुँचाएगा और बढ़ेगा भी। अगर तुम पढ़े-लिखे नहीं हो तो इन लोगों से बहुत कुछ सीख सकते हो क्योंकि जब अल्लाह की रहमत इन लोगों के ऊपर नाज़िल[1] होगी तो वह तुम्हें भी घेर लेगी।[2]

एक दूसरी हदीस में इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैंः

हकीम लुक़मान ने अपने बेटे को जो नसीहतें की थीं उन में से एक यह भी थी कि ऐ बेटा! अगर तुम्हें मौत के बारे में कोई शक हो तो नींद को अपने आप से अलग करके दखो और ऐसा तुम कभी नहीं कर सकोगे। अगर तुम्हें मरने के बाद फिर से ज़िंदा होने के बारे में शक हो तो सोने के बाद फिर से जागने को अपने से अलग करके देखना और तुम यह काम भी नहीं कर सकते। इसलिए जब तुम इन दोनों हालतों के बारे में सोचोगे तो अपने आप समझ जाओगे कि तुम्हारी जान किसी दूसरे के हाथ में है। साथ ही साथ तुम यह बात भी समझ जाओगे कि नींद मौत की जैसी ही एक चीज़ है और नींद के बाद जागना मरने के बाद फिर से जागने जैसा है।

---

[1] उतरेगी

[2] क़-स-सुल अम्बिया, रावन्दी/190

ऐ बेटा! लोगों के साथ हद से ज़्यादा मिलना-जुलना ठीक नहीं है क्योंकि ऐसा करने से आपस में दूरियाँ हो जाती हैं। इसी तरह लोगों से बिल्कुल अलग-थलग होकर रहना भी ठीक नहीं है क्योंकि ऐसा करने से आदमी बेइज़्ज़त हो जाता है।

हर जानदार अपने जैसे जानदार के साथ ही मेल-जोल रखता है मगर इंसान आपस में एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर नहीं रहते।

हमदर्दी और एहसान बस उसके साथ करना जिसे इन चीज़ों की ज़रूरत हो।

जिस तरह भेड़िये और भेड़ में कभी दोस्ती नहीं हो सकती उसी तरह अच्छे और बुरे आदमी में भी दोस्ती नहीं हो सकती।

अगर कोई आदमी किसी बुराई के पास जाता है तो वह बुराई उस पर अपना कुछ न कुछ असर ज़रूर छोड़ती है। इसी तरह अगर कोई आदमी किसी बुरे आदमी के साथ उठने-बैठने लगता है तो वह भी उस बुरे आदमी से बहुत सी बुरी बातें सीख लेता है।

जो आदमी लोगों के साथ लड़ने-झगड़ने को अच्छा समझता है वह गालियाँ खाता है और जो बुरी जगहों पर जाता है वह बदनाम हो जाता है।

जो आदमी बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना रखता है वह उनकी बुराईयों से नहीं बच पाता।

जिस आदमी का अपनी ज़बान पर कंट्रोल नहीं होता वह बाद में पछताता है।

ऐ बेटा! हमेशा अमानतदारी का ध्यान रखना क्योंकि अल्लाह ख़यानत करने वालों को पसंद नहीं करता है।

ऐ बेटा! लोगों के बीच अपने आप को ऐसा बनाकर मत दिखाना कि लोग समझें कि तुम अल्लाह से डरने वाले आदमी हो मगर अंदर से तुम्हारा दिल काला हो।[1]

एक और हदीस में है कि हकीम लुक़्मान फ़रमाते हैंः

ऐ मेरे बेटे! झूठा है वह आदमी जो कहता है कि बुराई को बुराई से मिटाया जा सकता है और अगर वह सच कह रहा है तो दो आग जलाकर देखे कि क्या एक आग दूसरी आग को बुझा सकती है? इसके उलट सच तो यह है कि अच्छाई बुराई को मिटाती है जैसे कि पानी आग को बुझाता है।

ऐ बेटा! अपनी दुनिया को अपनी आख़िरत[2] के बदले में बेच देना ताकि तुम दुनिया और आख़िरत दोनों जगह फ़ाएदे में रहो। साथ ही अपनी आख़िरत को अपनी दुनिया के बदले में न बेच देना क्योंकि अगर तुम ने ऐसा किया तो दोनों जगह घाटे में रहोगे।[3]

हदीस में है कि हकीम लुक़्मान[अ०] ज़्यादातर अकेले ही रहा करते थे। एक बार एक ग़ुलाम उनके पास आकर बोला कि आप हमेशा अकेले ही रहते हैं। अगर आप लोगों के साथ रहें तो उनके साथ आपका मेल-जोल बढ़ जाएगा। हकीम लुक़्मान ने कहा कि अकेले रहने में सोचने का

---

[1] क़-स-सुल अम्बिया, रावन्दी/190
[2] मरने के बाद की ज़िंदगी
[3] तम्बीहुल ख़्वातिर/46

वक़्त ज़्यादा मिलता है और ज़्यादा सोचना जन्नत की चाबी है।[1]

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैंः

हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को यह नसीहत भी की थी कि ऐ बेटा! तुम से पहले भी लोगों ने अपने बच्चों के लिए माल-दौलत और पैसा इकट्ठा किया था लेकिन न वह ख़ुद ही बचे और न ही उनका पैसा और न ही वह लोग बचे जिनके लिए वह सब कुछ इकट्ठा किया गया था।

तुम एक ऐसे मज़दूर हो जिससे कुछ काम करने को कहा गया है और इन कामों की कुछ मज़दूरी भी तय कर दी गई है। इसलिए अपना काम पूरा करके अपनी मज़दूरी ले लो।

इस दुनिया में उस भेड़ की तरह मत रहो जो किसी खेत में पहुँच जाती है तो ख़ूब खा-खाकर मोटी-ताज़ी हो जाती है जिसके बाद उसके मोटा होने की वजह से उसे ज़िबह कर दिया जाता है। असल में उसकी मौत उसके मोटा होने में ही छुपी होती है। इसलिए इस दुनिया को किसी दरिया पर बना हुआ पुल मान लो और इसके ऊपर से गुज़र जाओ और फिर कभी इस पुल पर वापस न आना।

अपनी दुनिया को आबाद करने की कोशिश मत करो क्योंकि तुम्हें यह काम करने के लिए कहा ही नहीं गया है।

यह भी जान लो कि जब क़यामत में तुम्हें अल्लाह के सामने खड़ा किया जाएगा तो तुम से

---

[1] तम्बीहुल ख़्वातिर/258

चार चीज़ों के बारे में सवाल किया जाएगाः तुम्हारी जवानी के बारे में तुम से सवाल होगा कि किस चीज़ में लगाकर बिता दी? तुम्हारी उम्र के बारे में पूछा जाएगा कि किन चीज़ों में गंवा दी? तुम्हारे माल और पैसे के बारे में सवाल किया जाएगा कि कहाँ से कमाया था? और कहाँ लगाया? इसलिए इन सवालों के जवाब देने के लिए तैयार हो जाओ।

दुनिया की चीज़ों में जो कुछ हाथ से चला जाए उस पर कभी दुखी मत होना क्योंकि थोड़ा माल बाक़ी नहीं रहता और ज़्यादा हो तो उसे संभालकर रखने की मुसीबत गले पड़ी रहती है। इसलिए हमेशा दुनिया के शर (बुराई) से दूर रहो और मरने के बाद वाली दुनिया में लगे रहो। अपनी आँखों पर पड़े ग़फ़लत[1] के पर्दे को हटा दो और अपने अच्छे कामों के साथ अपने पालने वाले की नेकियों में चले जाओ। हमेशा दिल से तौबा करते रहो और जब भी वक़्त मिले अच्छे काम करने की कोशिश करते रहा करो, इससे पहले कि फ़रिश्ते तुम्हारी तरफ़ चले आएं और अल्लाह का इरादा तुम्हारी तरफ़ मुड़ जाए जिसके बाद तुम्हारे और तुम्हारे इरादे के बीच अल्लाह के फ़रिश्ते आ जाएंगे (और फिर तुम कुछ भी नहीं कर सकोगे)।[2]

एक और हदीस में है कि हकीम लुक़मान ने नसीहत की थी कि ऐ बेटा! अगर कोई समझदार और अक़्लमंद तुम्हें मारे या तकलीफ़ पहुँचाए तो

---

[1] लापरवाही

[2] उसूले काफ़ी, 2/134

यह उससे अच्छा है कि जाहिल व नासमझ आदमी तुम्हारे बदन पर ख़ुशबूदार तेल की मालिश करे।[1]

हदीस में है कि एक आदमी ने हकीम लुक़्मान से कहा कि क्या आप फ़ुलाँ ख़ानदान के ग़ुलाम नहीं थे?

हकीम लुक़्मान ने कहा कि हाँ! बिल्कुल था।

फिर उसने पूछा कि आख़िर वह ऐसी कौन सी चीज़ थी जिसकी वजह से आप आज इतने ऊँचे दर्जे पर पहुँचे हुए हैं?

उन्होंने जवाब दिया कि सच्चाई, अमानतदारी, कम बोलना, ऐसा कोई काम न करना जिसमें मेरी कोई भलाई न हो, अपनी आँखों को उन चीज़ों से दूर रखना जिनका देखना अल्लाह ने हराम कर दिया है, अपनी ज़बान को फ़ाल्तू बातों से बचाकर रखना और हलाल रोटी खाना।

अब जो भी इन बातों पर चलने में पीछे रह जाएगा वह मुझ से नीचे दर्जे पर रहेगा और जो मुझ से ज़्यादा इन बातों पर चलेगा वह मुझ से आगे निकल जाएगा और जो मेरे बराबर इन बातों पर चलेगा वह मेरे बराबर रहेगा।

हकीम लुक़्मान ने फ़रमाया था कि ऐ बेटा! तौबा करने में देर मत किया करो क्योंकि मौत ख़बर दिए बिना ही अचानक आ दबोचती है।

किसी की मौत पर ख़ुश मत हुआ करो क्योंकि एक न एक दिन तुम्हें भी मौत आना ही है।

अगर कोई किसी मुसीबत में घिरा हो तो उसका मज़ाक़ मत उड़ाना।

---

[1] तम्बीहुल ख़्वातिर/245

लोगों के साथ अच्छाई और एहसान करने से कभी पीछे मत हटना।

ऐ बेटा! गुनाहों से दूर रहने को मुनाफ़े भरा एक ऐसा कारोबार समझो जिसके लिए तुम्हारे पास पहले से कोई पूँजी ही नहीं थी।

अगर तुम से कोई गुनाह हो जाए तो फ़ौरन सदक़ा निकाल दिया करो ताकि वह तुम्हारे गुनाह को मिटा दे।

ऐ बेटा! नासमझ आदमी को समझाना और नसीहत करना बड़ा कठिन काम होता है, जिस तरह किसी पहाड़ पर किसी बूढ़े आदमी के लिए चढ़ना कठिन होता है।

ऐ बेटा! जिस आदमी पर तुम ज़ुल्म कर रहे हो उसके साथ रहम (हमदर्दी) करने के बजाए ख़ुद अपने ऊपर रहम करना सीखो क्योंकि उस ज़ुल्म का नुक़सान तुम ख़ुद अपने आप को पहुँचा रहे हो।

जब तुम्हारी ताक़त तुम्हें किसी के ऊपर ज़ुल्म करने पर उभारे तो अपने ऊपर अल्लाह की ताक़त को याद कर लेना।

ऐ बेटा! जो तुम नहीं जानते उसके बारे में जानकारों और पढ़े-लिखों से जानकारी ले लो। इसी तरह जो कुछ तुम जानते हो उसे दूसरों को भी सिखाओ।[1]

एक दूसरी हदीस में है कि जब हकीम लुक़मान अपने शहर से निकले थे तो मोसुल के एक गाँव

---

[1] तम्बीहुल ख़्वातिर/549

में ठहरे थे जिसका नाम कोमाश था। जब उस गाँव में कोई भी आदमी उनके बताए रास्ते पर नहीं चला और उन्हें कोई साथी नहीं मिला तो वह बड़े दुखी हुए और उसके बाद अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लिया और अकेले अपने बेटे के साथ रहने लगे। हकीम लुक़मान अपने बेटे को नसीहतें करते रहते थे और अच्छी-अच्छी बातें समझाते रहते थे जिनमें से कुछ नसीहतें यह भी थीं:

ऐ बेटा! बातें कम किया करो और अल्लाह को हर जगह याद रखा करो क्योंकि अल्लाह ने तुम्हें अपने अज़ाब से डराया है और तुम्हें अक़्ल व समझ देकर इस दुनिया में भेजा है।

ऐ बेटा! दूसरे लोगों से नसीहत लिया करो, इससे पहले कि लोग तुम से नसीहत लेना शुरू कर दें। छोटी से छोटी मुसीबत से ही सीख ले लिया करो, इस से पहले कि तुम्हारे ऊपर कोई बड़ी मुसीबत आ जाए जिसका तुम्हारे पास कोई इलाज ही न हो।

ऐ बेटा! ग़ुस्से के वक़्त अपने आप को अपने कंट्रोल में रखना सीखो ताकि जहन्नम का ईंधन बनने से बच सको।

ऐ बेटा! ऐसे पैसे से मुसीबत कहीं अच्छी है जिसके बाद तुम ज़ालिम बन जाओ और दुसरों पर ज़ुल्म करते फिरो।

ऐ बेटे! लोगों की जानें उनके चाल-चलन के इर्द-गिर्द घूम रही हैं। इसलिए उनके हाथों और

उनके दिलों से होने वाले गुनाहों की वजह से उनका बुरा हो।

ऐ बेटा! जब तक शैतान दुनिया में है तब तक अपने गुनाहों की तरफ़ से आराम से मत बैठना।

ऐ बेटा! जब पिछले ज़मानों के अच्छे लोग दुनिया के धोखे में आ गए तो अब बाद में आने वाले इसके धोखे से भला कैसे बच सकते हैं?

ऐ बेटा! इस दुनिया को अपने लिए एक जेल बना लो ताकि मरने के बाद तुम्हें जन्नत मिल जाए।

ऐ बेटा! बादशाहों के पास मत फटकना क्योंकि वह तुम्हें मार डालेंगे और जो कुछ वह कहें मत करना वरना तुम दीन से फिर जाओगे।

ऐ बेटा! ग़रीबों और बेचारे मुसलमानों के साथ मेल-जोल रखना, यतीमों के साथ हमदर्द बाप की तरह रहना और बेवाओं के साथ हमदर्द शौहर के जैसा रहना।

ऐ बेटा! जो आदमी (सिर्फ़ ज़बान से) कहता है कि मुझे माफ़ कर दो उसे माफ़ नहीं किया जाता बल्कि उस आदमी के गुनाह को माफ़ किया जाता है जो अल्लाह के हुक्म पर चलते हुए अपनी ज़िंदगी बिताता है।

ऐ बेटा! पहले अपने पड़ोसी का ध्यान रखना और उसके बाद अपने घर वालों का।

ऐ बेटा! अगर कहीं सफ़र पर जाना हो तो पहले अपना साथी ढूँढना और उसके बाद अपना सफ़र शुरू करना।

ऐ बेटा! बुरे लोगों के साथ उठने-बैठने से अकेले रहना अच्छा है और अच्छे लोगों के साथ उठना- बैठना अकेलेपन से अच्छा है।

ऐ बेटा! जो भी तुम्हारे साथ अच्छाई करे तुम भी उसके साथ अच्छाई करो और जो तुम्हारे साथ बुराई करे उसे उसकी बुराई पर छोड़ दो क्योंकि जो कुछ बुरा तुम उसके साथ करना चाहोगे वह उससे भी बुरा अपने लिए करेगा जो कि तुम उसके साथ कर ही नहीं सकते।

ऐ बेटा! क्या भला कोई ऐसा आदमी है जो अल्लाह के बताए रास्ते पर चला हो और अल्लाह ने उसकी मदद न की हो, जिसने अल्लाह को ढूँढा हो और वह उसे न मिला हो, जिसने अल्लाह को याद किया हो और उसने उसे न याद किया हो, जिसने अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) किया हो और उसने उसे किसी दूसरे पर छोड़ दिया हो और जिसने अल्लाह की बारगाह में गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ाकर दुआ मांगी हो और उसने उस पर रहम न किया हो?

ऐ बेटा! बुज़ुर्गों से राय-मश्वरा करते रहा करो लेकिन छोटी उम्र वालों से राय लेते वक़्त पीछे रहना।

ऐ बेटा! बुराईयों में डूबे हुए लोगों के साथ भूलकर भी न उठना-बैठना क्योंकि यह लोग कुत्ते जैसे होते हैं। अगर तुम्हारे पास कुछ पाएंगे तो खा लेंगे और अगर उन्हें तुम्हारे पास कुछ नहीं मिलेगा तो तुम्हारी बुराई करेंगे और तुम्हें बदनाम भी

करेंगे। ऐसे लोगों की मोहब्बत एक घड़ी से ज़्यादा की नहीं होती है।

ऐ बेटा! अच्छे लोगों की दुश्मनी बुरे लोगों की दोस्ती से बेहतर होती है क्योंकि अगर तुम किसी मोमिन पर ज़ुल्म करोगे तो वह पलटकर कभी तुम्हारे ऊपर ज़ुल्म नहीं करेगा। अगर उससे माफ़ी मांगोगे तो वह तुम्हें माफ़ कर देगा लेकिन बुरा आदमी जब अल्लाह की नेमतों का ही ध्यान नहीं रखता तो वह भला तुम्हारा ध्यान क्या रखेगा?

ऐ बेटा! ख़ूब दोस्त बनाना लेकिन कभी भी दुश्मनों के शर (बुराई) से अपनी आँखें मत बंद रखना क्योंकि उनके सीनों में कीना (दुश्मनी) उसी तरह भरा रहता है जैसे ज़मीन के अंदर पानी छुपा हुआ है।

ऐ बेटा! जब भी किसी से मिलो तो पहले सलाम किया करो, उससे हाथ मिलाया करो और उसके बाद अपनी बात शुरू किया करो।

ऐ बेटा! लोगों को कभी कोई तकलीफ़ न पहुँचाना क्योंकि ऐसा करने से वह तुम्हारे दुश्मन हो जाएंगे, उनकी बुराई भी मत लेना वरना वह तुम्हें नीच समझेंगे, उनके साथ बहुत ज़्यादा मीठे बनकर भी मत रहना कि तुम्हें ही चट कर जाएं और न ही इतने कड़वे बने रहना कि तुम्हें उठाकर दूर फैंक दें।

ऐ बेटा! अल्लाह से डरते रहो और उसकी रहमत से कभी मायूस मत होना और हर पल अल्लाह से आस-उम्मीद लगाए रखो मगर ऐसी

उम्मीद मत लगाना कि तुम उसके अज़ाब से निडर हो जाओ।

ऐ बेटा! अपने दिल से ख़्वाहिशों[1] को निकाल दो क्योंकि जो भी अपने दिल की ख़्वाहिशों के पीछे भागेगा वह बर्बाद हो जाएगा।

ऐ बेटा! घमंड और अपनी बड़ाई कभी न करना क्योंकि अगर तुम ने ऐसा किया तो जहन्नम में तुम शैतान के साथ रहोगे। यह भी जान लो कि तुम्हारा आख़िरी घर क़ब्र है।

ऐ बेटा! अफ़सोस है उस आदमी पर जो घमंड करने वाला हो। आख़िर कैसे वह अपने आप को बड़ा समझता है जबकि मिट्टी से बना है और मिट्टी में ही जाएगा। इसके बाद यह भी पता नहीं कि वह जन्नत में जाकर कामयाब होगा या जहन्नम में जाकर घाटे में रहेगा? भला कोई आदमी कैसे घमंड कर सकता है जबकि वह दो बार पेशाब के रास्ते से बाहर निकला है।

ऐ बेटा! भला आदम की औलाद को कैसे नींद आ जाती है जबकि मौत उसे ढूँढ रही है और कैसे वह ग़ाफ़िल (बेख़बर) हो जाता है जबकि दूसरे उससे ग़ाफ़िल नहीं हैं?

ऐ बेटा! अल्लाह के नबी, उनके सारे साथी और अल्लाह के चुने हुए बंदे भी मौत से नहीं बचे तो उनके बाद भला दुनिया में कौन बच पाएगा?

---

[1] इच्छाओं

ऐ बेटा! अपने राज़ अपनी बीवी से मत बताया करो। साथ ही अपने घर के दरवाज़े पर भी मत बैठा करो।

ऐ बेटा! औरतें चार तरह की होती हैं जिनमें से दो तरह की अच्छी और दो तरह की बुरी हैं।

इन दो अच्छी औरतों में से एक वह है जो अपने ख़ानदान और अपने लोगों में बड़ी अच्छी मानी जाती है।

जब यह औरत अपने शौहर के यहाँ जाती है तो अपने आप को बहुत छोटा समझती है। जब उसका शौहर उसके साथ मोहब्बत व हमदर्दी करता है तो वह अल्लाह का शुक्र करती है और ख़ुश होती है। अगर उसे तकलीफ़ों या दुखों का सामना करना पड़ता है तो सब्र करती है। उसके हाथ में थोड़े से पैसे या माल भी बहुत होता है।

दूसरी अच्छी औरत वह है जिसके यहाँ औलाद ज़्यादा होती है। अपने शौहर से मोहब्बत करने वाली और उसका अच्छा चाहने वाली होती है। अपने शौहर के रिश्तेदारों और बच्चों से एक हमदर्द माँ की तरह मोहब्बत करती है। घर के बड़ों के साथ हमदर्द होती है और बच्चों से मोहब्बत करती है। अपने शौहर के उन बच्चों से भी मोहब्बत करती है जो उसकी दूसरी बीवियों के पेट से हों। अपने शौहर से भी मोहब्बत करती है। अपने आप को, अपने घर व माल को और अपने बच्चों को सुधारने वाली और ठीक करने वाली होती है। अगर शौहर उसके सामने होता है तो हर काम में उसकी मदद करती है और अगर सामने

नहीं होता तो हर हाल में उसका ध्यान रखती है। ऐसी औरत लाल रंग के सल्फ़र पॉउडर की तरह अनमोल होती है। जिस आदमी की बीवी ऐसी हो उसकी क़िस्मत का कोई जवाब नहीं है।

उन दो बुरी औरतों में एक वह है जो अपने आप को बहुत बड़ा समझती है मगर अपने ख़ानदान में उसे बड़ा गिरा हुआ समझा जाता है। अगर उसका शौहर उसे कुछ देता है तो भड़क उठती है और अगर नहीं देता तो ग़ुस्सा करती है और उसे दुख पहुँचाती है। इसलिए उसका शौहर उसकी वजह से हर पल मुसीबतों में घिरा रहता है और उसके पड़ोसी तकलीफ़ों में। ऐसी औरत शेर के जैसी होती है क्योंकि अगर उसके साथ रहोगे तो तुम्हें खा जाएगी और अगर उससे भागोगे तो मार डालेगी।

दूसरी बुरी औरत वह है जो बड़ी जल्दी ग़ुस्से में आ जाती है और बहुत जल्दी रोने लगती है। अगर उसका शौहर उसके सामने होता है तो उसकी भलाई में कुछ भी नहीं करती और अगर उसके सामने नहीं होता तो उसे बदनाम करने वाले काम करती है। ऐसी औरत बंजर ज़मीन की तरह होती है क्योंकि अगर तुम उसे पानी दोगे तो सारा पानी सोख लेगी और ज़मीन से कुछ भी नहीं मिलेगा। अगर उस ज़मीन को पानी नहीं दोगे तो हमेशा प्यासी ही रहेगी। अगर ऐसी औरत से कोई बच्चा होगा तो उस बच्चे से किसी को कोई भलाई नहीं मिलेगी।

ऐ बेटा! अगर औरतों को चखा और खाया जाता तो जिस तरह दूसरी चीज़ों को चखा और खाया जाता है उसी तरह कोई भी किसी बुरी औरत से शादी न करता।

ऐ बेटा! अगर कोई तुम्हारे साथ कोई बुराई करे तो तुम उसके साथ अच्छाई करना। दुनिया को बहुत ज़्यादा इकट्ठा मत करना क्योंकि तुम्हें एक न एक दिन इस दुनिया से निकल जाना है और फिर देखना कि यहाँ से कहाँ जाओगे।

ऐ बेटा! किसी यतीम के माल को मत खाना क्योंकि अगर तुम ने ऐसा कर दिया तो क़यामत में तुम्हें ज़लील होना पड़ेगा। इतना ही नहीं बल्कि वहाँ तुम्हें उसका माल वापस करने पर मजबूर भी किया जाएगा और तुम्हारे पास वापस करने के लिए कुछ भी नहीं होगा।

ऐ बेटा! क़यामत में जहन्नम की आग सबको घेर लेगी और उससे कोई नहीं बच सकेगा। अगर कोई बचेगा तो बस वह जिस पर अल्लाह रहम करेगा।

ऐ बेटा! तुम्हें ऐसा आदमी बिल्कुल अच्छा नहीं लगना चाहिए जो ज़बान का बुरा हो। ऐसे आदमी की ज़बान से लोग भी डरते हैं। क़यामत में ऐसे आदमी की ज़बान व दिल पर मोहर लगा दी जाएगी और इतना ही नहीं बल्कि उसके बदन के दूसरे हिस्से उसकी ज़बान के ख़िलाफ़ गवाही भी देंगे।

ऐ बेटा! किसी को भी गाली मत देना क्योंकि यह काम बिल्कुल ऐसा ही है जैसे तुम ने ख़ुद अपने माँ-बाप को गाली दी हो।

ऐ बेटा! हर आने वाला दिन एक नया दिन होता है। यह दिन अल्लाह के सामने तुम्हारे सारे किए-धरे पर गवाही देगा।

ऐ बेटा! याद रखो कि तुम्हें कफ़न में लपेट कर क़ब्र में डाल दिया जाएगा। जो कुछ तुम ने किया है वह सब तुम्हारी क़ब्र में तुम्हारे सामने आ जाएगा।

ऐ बेटा! ज़रा सोचो कि क्या तुम किसी ऐसे घर में रह सकते हो जिसके मालिक की बातों को तुम नहीं मानते और जिसे तुमने नाराज़ कर रखा है ?

ऐ बेटा! किसी भी आदमी को अपने ऊपर कंट्रोल मत करने देना।

ऐ बेटा! अपने इस मेहरबान व हमदर्द बाप की नसीहतों को हमेशा याद रखना। अच्छे कामों में जल्दी करना, इससे पहले कि तुम्हें मौत आ जाए और इससे पहले कि क़यामत आने पर पहाड़ अपनी जगह से चलने लगें, चाँद-सूरज एक साथ इकट्ठे हो जाएं और चलना बंद कर दें, आसमानों को तहस-नहस कर दें, फ़रिश्ते डरे हुए हों और आसमानों से नीचे आ जाएं और तुम से कहा जाए कि चलो! पुले सिरात से गुज़रने के लिए तैयार हो जाओ। उस वक़्त तुम अपने किए हुए सारे कामों को अपनी आँखों से देखोगे जब तराज़ू लोगों के आमाल (कामों) के तौलने के रख दी जाएगी और लोगों की फ़ाइलें खोल दी जाएंगी।

ऐ बेटा! मैंने तुम्हें सात हज़ार हिकमत (नसीहत) की बातें सिखाई हैं लेकिन अगर तुम इन चार बातों को ही याद रख लो और इन पर चल लो तो यही तुम्हारे लिए काफ़ी होंगीः पहली बात यह कि अपनी कश्ती को ख़ूब मज़बूत बनाना क्योंकि यह दरिया बड़ा गहरा है। दूसरी बात यह कि अपने बोझ को हल्का रखना क्योंकि तुम्हारे सामने बड़ा कठिन रास्ता है। तीसरी बात यह कि इस रास्ते के लिए ज़रूरत का सामान ढेर सारा रखना क्योंकि यह सफ़र बहुत लम्बा है और चौथी बात यह कि अपने आमाल (कामों) को ख़ालिस रखना (यानी जो काम भी करो दिल से अल्लाह के लिए करना) क्योंकि तुम्हारे कामों को क़ुबूल करने वाला हर चीज़ की ख़बर रखने और हर चीज़ के बारे में जानने वाला है।

ऐ बेटा! अच्छाई या बुराई चाहे एक राई के दाने के बराबर ही क्यों न हो या चाहे किसी पत्थर के अंदर या आसमानों पर या चाहे ज़मीनों की गहराईयों में ही क्यों न हो, अल्लाह क़यामत के दिन उसे ज़रूर सामने लाएगा।

अल्लाह *लतीफ़* यानी करम करने वाला और *ख़बीर* यानी हर छुपी से छुपी हुई चीज़ की ख़बर रखने वाला है।

ऐ बेटा! नमाज़ क़ायम करो, अच्छाईयों का हुक्म दो, बुराईयों से रोको और इस रास्ते में जो भी मुसीबत आए उस पर सब्र करो क्योंकि यह एक बड़ी हिम्मत वाला काम है। ख़बरदार! लोगों के सामने अकड़कर मुँह न फुला लेना और ज़मीन पर अकड़ कर मत चलना क्योंकि अल्लाह अकड़ने वालों और घमंडियों को पसंद नहीं करता है।

(सूरए लुक़मान/16–18)